Topic ! - Law of three Stages

(III) तात्विक स्तर — इस स्तर पर ईश्वर की वैयक्तिक शक्ति की धारणा का लोप होता है। ईश्वर का चिंतन व्यक्ति के रूप में न होकर, एक अमूर्त शक्ति के रूप में होता है। जो कुछ भी संसार में हो रहा है वह एक व्यक्ति के रूप में ईश्वर के कारण नहीं वरन् एक अदृश्य या निराकार व्यक्ति के कारण है या हो रहा है। इस शक्ति का अस्तित्व है, परन्तु इसका संबंध किसी व्यक्ति विशेष या किसी शरीर विशेष से नहीं है। एक अमूर्त, निराकार शक्ति के आधार पर जो कुछ भी हो रहा है

Scanned with CamScanner

वह शाश्वत है और स्वयं पूर्ण है। इस स्तर की कोई विशिष्ट विशेषता उल्लेखनीय नहीं है क्योंकि यह स्तर धार्मिक और प्रत्यक्षात्मक स्तर के बीच का स्तर है।

3) वैज्ञानिक या प्रत्यक्षात्मक स्तर – तात्विक विचार शाश्वत या स्वयं पूर्ण हो सकता है। पर वास्तविक तर्कों तथा तथ्यों पर आधारित नहीं हो सकता। जब व्यक्ति तात्विक विचारों को छोड़कर निरीक्षण और तर्क के आधार पर इस संसार की घटनाओं को समझने और परिभाषित करने लगता है तब वो वैज्ञानिक या प्रत्यक्षात्मक स्तर में उसका प्रवेश होता है। कॉम्ट का कथन है कि तर्क और निरीक्षण सम्मिलित रूप में वास्तविक ज्ञान का आधार है। जब हम किसी घटना की व्याख्या करते हैं तो कुछ सामान्य तथ्यों और उस घटना-विशेष के बीच सम्बन्ध ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। यह अन्वेषण निरीक्षण के द्वारा ही यथार्थ हो सकता है। निरीक्षण ही प्रमाण है क्योंकि वह वास्तविक है न कि काल्पनिक। कॉम्ट के अनुसार विश्व के विभिन्न तथ्यों, घटनाओं आदि को समझने का वास्तविक तथा निर्भर योग्य साधन निरीक्षण और वर्गीकरण ही है। प्रत्यक्षात्मक स्तर पर मनुष्य इसीलिए न तो काल्पनिक किला बनाता है और न ही तात्विक दृष्टि से संसार के विभिन्न तत्वों को देखने का प्रयास करता है। इस स्तर पर ज्ञान का संग्रह ही एकमात्र साध्य अंतिम उद्देश्य है।

मानव ज्ञान अथवा चिंतन के उक्त तीन स्तरों की विवेचना करते हुए कॉम्ट इस सत्य को भूला नहीं जाते हैं कि इन तीनों स्तरों का पृथक-पृथक

अस्तित्व नहीं हो सकता है। दूसरे शब्दों में, ये तीनों स्तर एक-दूसरे से पूर्णतया परे हैं। केवल एक के बाद ही दूसरे स्तर का आविर्भाव होता है, ऐसा सोचना उचित न होगा। हो सकता है कि ये एक ही समाज में या एक ही मस्तिष्क में साथ-साथ पाए जाते हों। हो सकता है कि धार्मिक विषयों में हम धार्मिक स्तर पर हों, जीवन के आदर्शों के संबंध में तात्विक स्तर पर और जीवित रहने के साधनों के संबंध में वैज्ञानिक स्तर पर। इन तीनों स्तरों का अनोखा समन्वय भारतीय समाज में मिलता है। उदाहरणार्थ हिन्दू विवाह आज भी धार्मिक स्तर पर है और हिन्दू लोग विवाह को एक धार्मिक संस्कार के रूप में मानते हैं। गाँधीजी की सत्याग्रह, अहिंसा अथवा अल्लाह ईश्वर एक ही नाम है वाली प्राथमिक रूप से दार्शनिक है जबकि भारतीय पंचवर्षीय योजनाएं प्रत्यक्ष स्तर की परिचायक हैं। अतः मानव चिन्तन अथवा ज्ञान के तीनों स्तर पूर्णतया पृथक नहीं हैं। कॉम्ट की इस विचारधारा को एक अन्य उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट किया जाता है। जैसे एक वैज्ञानिक जो कि अन्य सभी विषयों में विज्ञान पर या वैज्ञानिक पद्धति पर विश्वास करता है, परन्तु यदि उसके इकलौते बेटे की मृत्यु हो जाती है तो हो सकता है कि वह वैज्ञानिक ढंग से अपने आपको सान्त्वना न दे सके। ऐसे अवसरों पर उसके लिए तात्विक विचारों का सहारा लेना अधिक उचित होगा और वह यह सोचकर कि संसार में मिलन और विरह, सुख और दुःख दोनों को ही सहना पड़ता है, या धार्मिक आधार पर यह निष्कर्ष निकालकर कि ईश्वर जो कुछ भी करता है हमारे भलाई के लिए ही करता

है, अपने को खो दे सकती हैं या देता है। अतः स्पष्ट
है कि मानव ज्ञान या चिंतन की उपर्युक्त तीनों अवस्थाएँ
एक ही समाज में या एक ही मस्तिष्क में साथ-साथ
पाई जा सकती हैं।

Scanned with CamScanner